095 सूरह तीन. (मजामीन)

खुलासा मज़ामीने कुरान उर्दू किताब. मौलाना मलिक अब्दुर्रउफ.

नोट.- ये PDF कोई भाषा या व्याकरण नही हे,
बल्कि दीन-ए-इस्लाम को समझने के लिये हे.

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहिम.

» इन्सान की फितरत (पैदाइश).

अंजीर ज़ैतून तूरे सीना (तूर पहाड) और मक्का शहर को दलील के तौर पर पेश करके फरमाया के इन्सान अपनी फितरत के एतेबार से अच्छे से अच्छे तरीके पर बना हे, उस्को गिरावट से बचने के लिये ईमान और नेक आमाल की ज़रूरत हे.

इस मुबारक सूरह मे अंबिया (अल) के ज़ाहिर होने के मकामात फिलिस्तीन, तूरे सीना (तूर पहाड) और मक्का शहर की कसम खाकर फरमाया हे अल्लाह तआला ने इन्सान को बेहतरीन सांचे मे डालकर पैदा किया हे के उस्के अन्दर नुबुव्वत जैसे उंचे ओहदे को सम्भालने वाले लोग पैदा हुये हे,

लेकिन मखलूक मे सब्से अफज़ल होने के बावजूद इन्सानो मे एक वो हे जो बुराई की तरफ मुतवज्जेह होते हे, और अखलाकी गिरावट मे गिरते-गिरते उस आखिरी हद तक पहुंच जाते हे जहान उन्से ज्यादा ज़लील कोई दूसरी मखलूक नही,

दूसरे वो हे जो ईमान और नेक आमाल का रास्ता इख्तियार करते हे वो उन बुलन्दियो तक अपनी पहुंच हासिल कर लेते हे जिस पर फरिश्तो को भी रशक आता हे, उन्के लिये कभी ना खत्म होने वाला अजर व सवाब हे.

उस्के बाद इरशाद फरमाया कि जब इन्सानो की एक दूसरे से बिल्कुल मुख्तलिफ किसमे पाई जाती हे तो मरने के बाद बुराई करने वाले को सज़ा और नेकी करने वाले को सवाब ना मिले और दोनो का अंजाम बिलकुल एक जैसा हो तो उस्का मतलब ये होगा कि अल्लाह तआला की खुदाई मे इन्साफ नही हे, हालाकि ये ख्याल कैसे किया जा सकता हे कि अल्लाह तआला जो सब हाकीमो से बडा हाकिम हे वोह इन्साफ ना करे. ६